SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

महिला सशक्तिकरण और महात्मा गांधी

कुमारी नम्रता, (Ph.D.), गृह विज्ञान विभाग,
+2, P.G.H.S, कुढ़नी, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
कुमारी नम्रता, (Ph.D.), गृह विज्ञान विभाग,
+2, P.G.H.S, कुढ़नी, मुजफ्फरपुर (बिहार), भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 12/10/2020
Revised on : -----
Accepted on : 19/10/2020
Plagiarism : 01% on 12/10/2020

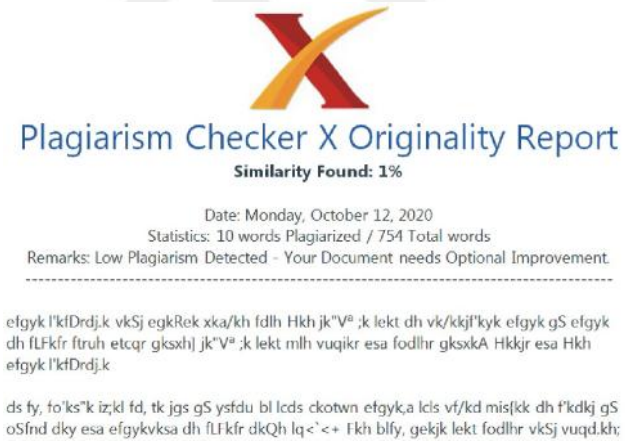
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Monday, October 12, 2020
Statistics: 10 words Plagiarized / 754 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

efgyk l'kfDrdj.k vkSj egkRek xka/kh fdlh Hkh jk"Vª ;k lekt dh vk/kkjf'kyk efgyk gS efgyk dh fLFkfr ftruh etcqr gksxh] jk"Vª ;k lekt mlh vuqikr esa fodlhr gksxkA Hkkjr esa Hkh efgyk l'kfDrdj.k

ds fy, fo'ks"k iz;kl fd, tk jgs gS ysfdu bl lcds ckotwn efgyk,a lcls vf/kd mis{kk dh f'kdkj gS oSfnd dky esa efgykvksa dh fLFkfr dkQh lq<`<+ Fkh blfy, gekjk lekt fodlhr vkSj vuqd.kh;

शोध सार

किसी भी राष्ट्र या समाज की आधारशिला महिला है महिला की स्थिति जितनी मजबुत होगी, राष्ट्र या समाज उसी अनुपात में विकसित होगा। भारत में भी महिला सशक्तिकरण के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे है, लेकिन इस सबके बावजूद महिलाएं सबसे अधिक उपेक्षा की शिकार है। वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति काफी सुढ़ृढ़ थी, इसलिए हमारा समाज विकसित और अनुकणीय था। बाद के वर्षो में धीरे–धीरे उन पर अंकुश लगाया जाने लगा, उनके अधिकारों को सीमित किया जाने लगा, यहां तक की समान्य आचार व्यवहार पर भी कड़ी दृष्टि रखी जाने लगी। समाज में पुरूष की प्रधानता बढ़ गयी और स्त्रियां उनकी सहकामिणी न रहकर मातहत हो गयी। किसी भी राष्ट्र या समाज की आधारशिला महिला है, महिला की स्थिति जितनी मजबुत होगी, राष्ट्र या समाज उसी अनुपात में विकसित होगा। भारत में भी महिला सशक्तिकरण के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे है, लेकिन इस सबके बावजूद महिलाएं सबसे अधिक उपेक्षा की शिकार है।

मुख्य शब्द

महिला सशक्तिकरण, राष्ट्र, आधारशिला।

गांधी जी के अनुसार हमारे समाज में कोई सबसे अधिक हताश हुआ है, तो वे स्त्री ही है और इस वजह से हमारा अध पतन भी हुआ है।

1. गांधी जी ने स्त्रियों को देश की लड़ाई के साथ जोड़कर तथा समाज आश्रम में उनकों समान हक व स्वतंत्रता प्रदान कर समाज में स्त्रियों का दर्जा कैसा होना चाहिए इसकी अच्छी मिसाल उनके जीवन में मिलती है। मनुष्य के रूप में यदि स्त्री का मूल्य प्रतिष्ठित नहीं होता तो स्त्री की प्रकृति संभव नहीं होती।

महिला सशक्तिकरण का प्रश्न विश्व के बुद्धिजीवियों समाज सुधारकों एवं नेताओं के लिए चिंता का विषय रहा है। लेकिन सशक्तिकरण का क्या अर्थ है? और किस प्रकार का विकास के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है? सशक्तिकरण क्या है? विषय पर जो रालैंड ने अपने एक लेख के उपर शक्ति को शक्ति के बीच अंतर स्पष्ट किया है। शक्ति का अभिप्राय है कुछ लोगों के पास दूसरों को नियंत्रित करने की शक्ति का होना, अर्थात् शक्ति का अभिप्राय ऐसी शक्ति जो दमनकारी लक्ष्यों और इच्छाओं को चुनौती दे सके।

महिलाओं को पुरूषों के बराबर वैद्यानिक, राजनैतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में उनके परिवार समुदाय समाज एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वातयतता से है। भारत में महिला सशक्तिकरण को प्राथमिक उद्देश्य महिलाओं की समाजिक एवं आर्थिक दशा को उन्नत बनाना है। इसके लिए महिलाओं को स्वास्थ शिक्षा रोजगार के अवसर तथा राजनैतिक एवं संवैधानिक अधिकारों से अलंकृत कर स्वायतता प्रदान करेगी तथा उनकी उस कुंठा को दूर करना होगा कि वस्तु मात्र ही नहीं है वे चैतन्य है। वे जीवन्त ही नहीं जीवन दायिनी भी है। अब तो राजनैतिक और संवैधानिक अधिकारों में 33 प्रतिशत महिला आरक्षण कानून लागू होने की संभावना है। ऐसी स्थिति में महिला सशक्तिकरण का अध्ययन समाचिन है।

2. इन विचारों को गाँधी जी ने सैद्यांतिक रूप में रखा ही नहीं बल्कि अपने व्यवहार में भी इसका कार्यान्वयन किया है, इसके उदाहरण अभी भी आश्रम के रूप में जीवित है।

गांधी जी ने 1916 में महिला समाज को शक्ति के साथ पुरूष की सही अर्थो में सहयोगी कहा है। मनुष्य के किसी भी कार्य क्षेत्र में भाग लेने का वह अधिकार रखती है, इसलिए उसे आजादी के अधिकार सामान रूप मिलने चाहिए। राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय क्षेत्रों में बहुत कम महिलाएं अपनी पहचान बना पायी है। गांधी जी के अनुसार ''स्त्रियों को मताधिकार तो होना ही चाहिए उन्हें कानून के तहत समाज दर्जा भी मिलनी चाहिए''।

''महिला सशक्तिकरण केवल नैतिक अनिवार्यता नहीं है बल्कि लोकतांत्रिक परंपरओं को सुदृढ़ करने तथा अन्याय व उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष करने के पूर्व ज्ञात भी है''।

3. इसी भावना से अनुप्रेरित होकर विचार के एक अत्यंत पिछड़े जिले पूर्वी चंपारण जिला में महात्मा गांधी के ''सत्य के प्रयोग'' की भूमि रही है यहां की महिलाओं को जीवन की मुख्य धारा में लाने और स्वस्थ नागरिक बनाने के लिए गांधीजी ने कस्तुरवा अवन्ती बाई इत्यादि महिलाओं स्वंय सेविका को उनके बीच भेजा, ताकि वे उन्हें प्रशिक्षित कर सके उन लोगों का सकारात्मक प्रभाव देखने को भी मिला।

4. ''सत्य अहिंसा की नीव पर निर्मित नवीन विश्व व्यवस्था की योजना में जितना और जैसा अधिकार पुरूषों को अपने भविष्य की रचना का है उतना और वैसा ही अधिकार स्त्री को भी अपना भविष्य तय करने का है।''

5. गांधी जी का मानना था कि अहिंसक समाज ऐसी स्त्री एवं पुरूष दोनों के कर्तव्यों का ही शुभ परिणाम है। आजादी और स्वाधीनता का किसी भी महिलाओं का उतना ही अधिकार है, जितना एक पुरूष को जिस तरह पुरूष अपनी प्रवृति के क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान का अधिकार माना गया है।

उसी तरह स्त्री भी अपनी प्रवृति के क्षेत्र में सर्वोच्च मानी जानी स्त्रियों की स्वतंत्रता का पूर्ण विकास महिला सशक्तिकरण का मुख्य उद्देश्य है।

निष्कर्ष

इस शोध पत्र में महात्मा गाँधी द्वारा महिलाओं के सामान अधिकारों का वैदिक काल से लेकर इस आधुनिक काल का सराहनीय प्रयासों का वर्णन किया गया हैं। गाँधी जी के अनुसार हमारे समाज में कोई सबसे अधिक हताश हुआ है, तो वह स्त्री ही हैं। किसी भी देश की सभ्यता संस्कृति एवं उन्नति का मूल कारण वहाँ की महिला वर्ग की स्थिति को देखकर आसानी से पता लगाया जा सकता है। दुर्भाग्य से अभी सभ्यता संस्कृति या शिष्टता की दौड़ में बहुत पीछे है। प्राचीन युग मे नारी का बड़ा सम्मान था। द्वापर युग आने पर अविश्वास उत्पन्न हुआ, स्त्री अनेक

बंधनों से बाँध दी गई। मध्यकाल में नारी को गुलाम और भोग्या बनाकर पतन दिशा की ओर मोड़ दिया गया। यह धर्मिणी के स्थान पर यह केवल दासी एवं वासना पूर्ति की साधन मात्र बन गई।

महात्मा गाँधी द्वारा किय गए प्रयासों के पश्चात् आधुनिक काल में महिलाओं ने हर क्षेत्र में विकास किया है। भारतीय संविधान में भी नर नारी को सम्मान दिए गए। शिक्षित महिला वर्ग ने स्वयं पर्दा का त्याग किया। आज 21वीं सदी में नारी पुरूष से कंधे से कंधा मिलाकर समाज के निर्माण में जुटी है। सघंर्षो में शक्तिरूपा बनकर पुरूष को सहयोग दे रही है। और उसकी प्रेरक शक्ति बनी हुई है। गाँधी जी ने स्त्रियों को देश की लड़ाई के साथ जोड़ कर नया आयाम दिया है। महिला शक्तिकरण केवल नैतिक अनिवार्याता नही है, बल्कि लोकतांत्रिक परमपराओं को सुदृढ़ करने तथा अन्याय व उत्पीड़न के खिलाफ सघंर्ष करने के पूर्न ज्ञान भी है। सत्य और अहिंसा की नींव पर निर्भिक नवीन विश्व व्यवस्था की योजना में जितना पुरूषों का अधिकार है, उतना और वैसा ही अधिकार स्त्री को भी अपना भविष्य तय करने का है।

संदर्भ सूची

1. दत के0 के0– *फ्रीडम मुवमेंट इन बिहार* (खंड–1–3 पटना 1953)।
2. गांधी हरिजन सेवक– (21.01.1941) गांधी जी ने 196 *मेरे सपनों का भारत,* नवजीवन मुद्राणालय, अहमदाबाद।
3. तिवारी, आर. पी., (1999), *भारतीय नारी : वर्तमान समस्याएँ,* ए0 पी0 एच0 पब्लिासिंग कारपोरेशन, दरियागंज, नई दिल्ली।
4. प्रसाद, राजेन्द्र, *चंपारण सत्याग्रह:* बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना।
5. उपासना, (2007), *उतर आधुनिकतावाद–सच्ची और गांधी,* राउत पब्लिकेशन –जयपुर शिक्षा, (नवजीवन प्रकाशन 1991)
6. हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, आज, प्रभात खबर इत्यादि।
7. http://hindi.cultural india.net/mahatma.gandhi.html.

****